
Ratnakarakrita Shiva Stuti

—
रत्नाकरकृता शिवस्तुतिः
—

Document Information



Text title : Ratnakarakrita Shiva Stuti

File name : ratnAkarakRRitAshivastutiH.itx

Category : shiva, shivarahasya, stuti

Location : doc_shiva

Transliterated by : Ruma Dewan

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shivarahasyam | harAkhyah tRitIyAMshaH | uttarArdham | adhyAyaH 37
| 70-83 ||

Latest update : January 30, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 1, 2024

sanskritdocuments.org



रत्नाकरकृता शिवस्तुतिः



रत्नाकरः -

- क महेश्वरता क शम्भुता क कृपासागरता क चाज्ञता ।
क निरन्तरदीनबन्धुता क शिवाद्याप्यकृपैव मय्यपि ॥ ७० ॥
- क चतुर्दशलोकनाथता त्रिदशाधीश्वरता दयार्द्रता ।
क विलक्षणदक्षतापि ते क शिवाद्याप्यकृपैव मय्यपि ॥ ७१ ॥
- क ललाटकृपीठयोनिता क जटाजूटतटेन्दुखण्डता ।
क तटित्तिनीवधूटिता क शिवाद्याप्यकृपैव मय्यपि ॥ ७२ ॥
- क तवामितवेदवेद्यता क तवापारगुणाम्बुराशिता ।
क विपद्गणशैलवज्रता क शिवाद्याप्यकृपैव मय्यपि ॥ ७३ ॥
- क तवाद्भुतभूतिहेतुना क विभूतिव्रतपूतता तथा ।
क तवामितपुण्यकीर्तिता क शिवाद्याप्यकृपैव मय्यपि ॥ ७४ ॥
- क सुरासुरवर्गवन्द्यता क महाशैवमहार्हणार्थता ।
क महोत्सवदानलोलता क शिवाद्याप्यकृपैव मय्यपि ॥ ७५ ॥
- क तव त्रिपुरप्रहारिता क महाशूलविराजमानता ।
क सुमेरुपिनाकपाणिता क शिवाद्याप्यकृपैव मय्यपि ॥ ७६ ॥
- क तवामरसुन्दरीकरप्रकरापारसरोजपूज्यता ।
क सुमेरुशरासनज्यता क शिवाद्याप्यकृपैव मय्यपि ॥ ७७ ॥
- क भवाम्बुधिकर्णधारता क महामृत्युभयापहारिता ।
क शिवार्चककल्पवृक्षता क शिवाद्याप्यकृपैव मय्यपि ॥ ७८ ॥
- क तवामितकालकालता क हालाहलनीलकण्ठता ।
क दिग्म्बरतापि सांवता क शिवाद्याप्यकृपैव मय्यपि ॥ ७९ ॥
- क परात्परतापि मित्रता क वरोरःसरराजहारता ।

क तवोन्नतपञ्चवक्रता क शिवाद्याप्यकृपैव मय्यपि ॥ ८० ॥

क शिवार्चकजीवनार्थिता क महापापवनाग्नितापि ते ।

क शिवव्रतचित्तसङ्गिता क शिवाद्याप्यकृपैव मय्यपि ॥ ८१ ॥

किं त्वत्कारुणिकत्वमप्यघकुलारण्यानलत्वं च ते

किं तद्भुक्तिदमोक्षदत्वमपि ते नीतं गतं वा स्वतः ।

तच्चेदस्ति वशे तवापि किमिति त्वत्पादुकाराधकं

मामप्येवमुपेक्ष्य तिष्ठसि कथं श्रीनीलकण्ठाधुना ॥ ८२ ॥

विश्वस्येन्दुकलावतंसमसकृद्विल्वीदलैः कोमलैः

गङ्गातुङ्गतरङ्गशीतलजलैववेशलिङ्गं मुदा ।

प्राणाद्यैरुपहारतामुपगतैरभ्यर्चितं किं मया श्रीविश्वेश

न दुर्दशा परिहृता संसारजातार्जिता ॥ ८३ ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते रत्नाकरकृता शिवस्तुतिः सम्पूर्णा सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । हाराख्यः तृतीयांशः । उत्तरार्धम् । अध्यायः ३७। ७०-८३
॥

- .. shrIshivarahasyam . harAkhyah tRRitIyAMshaH . uttarArdham .
adhyAyaH 37. 70-83 ..

Notes:

Ratnākara रत्नाकर; feeling forlorn, beseeches Śiva शिव to have mercy on him.

Proofread by Ruma Dewan

Ratnakarakrita Shiva Stuti

pdf was typeset on February 1, 2024

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

